Asian Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 2, Issue 7, July 2014

ISSN: 2321-8819 (Online)
2348-7186 (Print)
Impact Factor: 0.923

मालवा प्रदेश के ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटको का संचरण प्रतिरूप

अनिमा
शोध छात्रा पी एच डी (भूगोल),
देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

संक्षेप

ऐतिहासिक पर्यटन प्राचीन परम्परा होने के बावजूद भी एक विषय के रूप में नवीन संकल्पना है। मालवा प्रदेष मध्यप्रदेष का एक ऐसा क्षेत्र है जहां पारिस्थिकी पर्यटन विकास हेतु प्राकृतिक और ऐतिहासिक संसाधनों के विषाल भंडार मौजूद है परंतु उचित नियोजन के अभाव में यहां पर न केवल इन संसाधनों का क्षय हो रहा है अपितु कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व पुरातात्विक धरोहर भी अपने अस्तित्व को खोते जा रहे है। यहॉ आ रहे पर्यटकों के संचरण प्रतिरूप एवं उनके उद्देष्यों का जानना एक जटिल कार्य है। पर्यटको के संचरण प्रतिरूप के यथार्थ रूप को जानने हेतु पर्यटको से गहन सम्पर्क आवष्यक है। पर्यटन संबंधी सूचनाऍ मुख्यतः पर्यटको का वितरण स्वरूप, पर्यटको की आयु, लिंग व वैवाहिक स्तर, पर्यटको की विश्राम की अवधि, षिकायते, प्रतिक्रियाऍ, सुझाव इत्यादि से संबंधित विषेषताओं का अध्ययन पर्यटक की विषेषताओ से परिचित कराता है। इन विषेषताओ का अध्ययन क्षेत्र के भावी पर्यटन विकास में सहायक सिद्ध होता हैं।

शब्द कुंजी ऐतिहासिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन पर्यटक, संचरण प्रतिरूप

उद्देष्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देष्य प्रदेष में आ रहे पर्यटको के संचरण प्रतिरूप द्वारा पर्यटन सर्किट का निर्धारण करना ताकि भविष्य में उसी के अनुसार पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन हेतु मालवा प्रदेष का चयन किया गया है जो मध्य प्रदेष की एक महत्वपूर्ण भौगोलिक इकाई है जिसके अंतर्गत राज्य के 16 जिले सम्मिलित है, यथा – नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, शाजापुर, राजगढ, इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, देवास, सीहोर, रायसेन, विदिषा, गुना तथा सागर। इसका भौगोलिक विस्तार $21^0 54'$ उत्तरी अक्षांष से $23^0 30'$ उत्तरी अक्षांष तक एवं $74^0 24'$ पर्वी देषांतर से $78^0 29'$ पूर्वी देषांतर के मध्य तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 105450 वर्ग कि.मी. है।

आंकड़ो का स्त्रोत एवं विधि तंत्र

ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रों के अध्ययन हेतु क्षेत्र के चयनित पर्यटन केन्द्रों पर वर्ष 2011 व 2012 के मध्य विस्तृत जानकारी प्रष्नावली द्वारा ज्ञात गई है।

तालिका क्रमांक – 1
मालवा : ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रो मे पर्यटको का संचरण प्रतिरूप (प्रतिषत मे)

पर्यटको का संचरण (किलो मीटर मे)	ऐतिहासिक पर्यटन स्थल (प्रतिषत मे)
0–100	28
100–200	26
200–300	23
300–400	11
400–500	7
500 से अधिक	5

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

द्वितीयक ऑकडों का संकलन प्रकाशित स्त्रोतो तथा पर्यावरण व पर्यटन संबंधित पत्रिकाएं, पर्यटन कार्यालय, तथा इंटरनेट, आदि से प्राप्त किए गए है। इन ऑकड़ों के संकलन के उपरान्त उनका सारणीयन और विष्लेषण यादृच्छिक विधि से चुने हुए लगभग 50 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर आए लगभग 5 प्रतिषत पर्यटक ऑकडो के आधार पर किया गया है।

पर्यटको का संचरण प्रतिरूप

भारत के विभिन्न क्षेत्रो से पर्यटक भ्रमण के लिए मालवा प्रदेष में आते है। परन्तु क्षेत्र में आ रहे पर्यटक निकटवर्ती केन्द्रो से अधिक थे। विदेषी पर्यटको में प्रायः पर्यटक श्रीलंका, चीन, नेपाल, आदि से अधिक आए थे। परन्तु यदि अन्य क्षेत्रो से तुलना कि जाय तो अध्ययन क्षेत्र में आने वाले विदेषी पर्यटको का आगमन बहुत कम है। भोपाल, मांडू, भीमबेटका, उदयगिरि आदि केन्द्रो को छोड दिया जाय तो अन्य केन्द्रो में विदेषी पर्यटको को आगमन नहीं होता है। कुल पर्यटको का मात्र 2 प्रतिषत विदेषी पर्यटक ही पर्यटन केन्द्रों में भ्रमण हेतु आए थे वहीं 92% पर्यटक माण्डू, सांची, उज्जैन, भीमबेटका ,भोपाल, इन्दौर, चंदेरी व विदिषा आदि केन्द्रो की ओर अधिक आकर्षित हुए।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक केन्दों में पर्यटको का सबसे अधिक आगमन निकटवर्तीय क्षेत्रो से ही होता है। औसतन 54% पर्यटक 200 किलोमीटर की दूरी तय करके आते है वही 500 किलोमीटर की अधिक दूरी तय करके केवल 5% पर्यटक ही पर्यटन केन्द्रों की और अग्रसर हुए।

तालिका क्रमांक – 2
मालवा :ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रो में पर्यटक की आयु संरचना (प्रतिषत मे)

आयु–वर्ग (वर्ष मे)	देषी पर्यटक	विदेषी पर्यटक
0–05	11	–
15–30	38	37
30–45	27	43
45–60	23	20
60 से अधिक	1	–

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक केन्द्रों में आने वाले सर्वाधिक पर्यटको की आयु 15 से 45 वर्ष के माध्य थी। देषी पर्यटको में जहां 65% पर्यटको की आयु 15–45 वर्ष के मध्य थी वहीं विदेषी पर्यटकों में यह आकडा 80% का था । 60 वर्ष से अधिक आयु के मात्र 1% पर्यटक ही ऐतिहासिक केन्द्र की ओर आकर्षित हुए इनमे एक भी पर्यटक विदेषी वर्ग से नही था ।

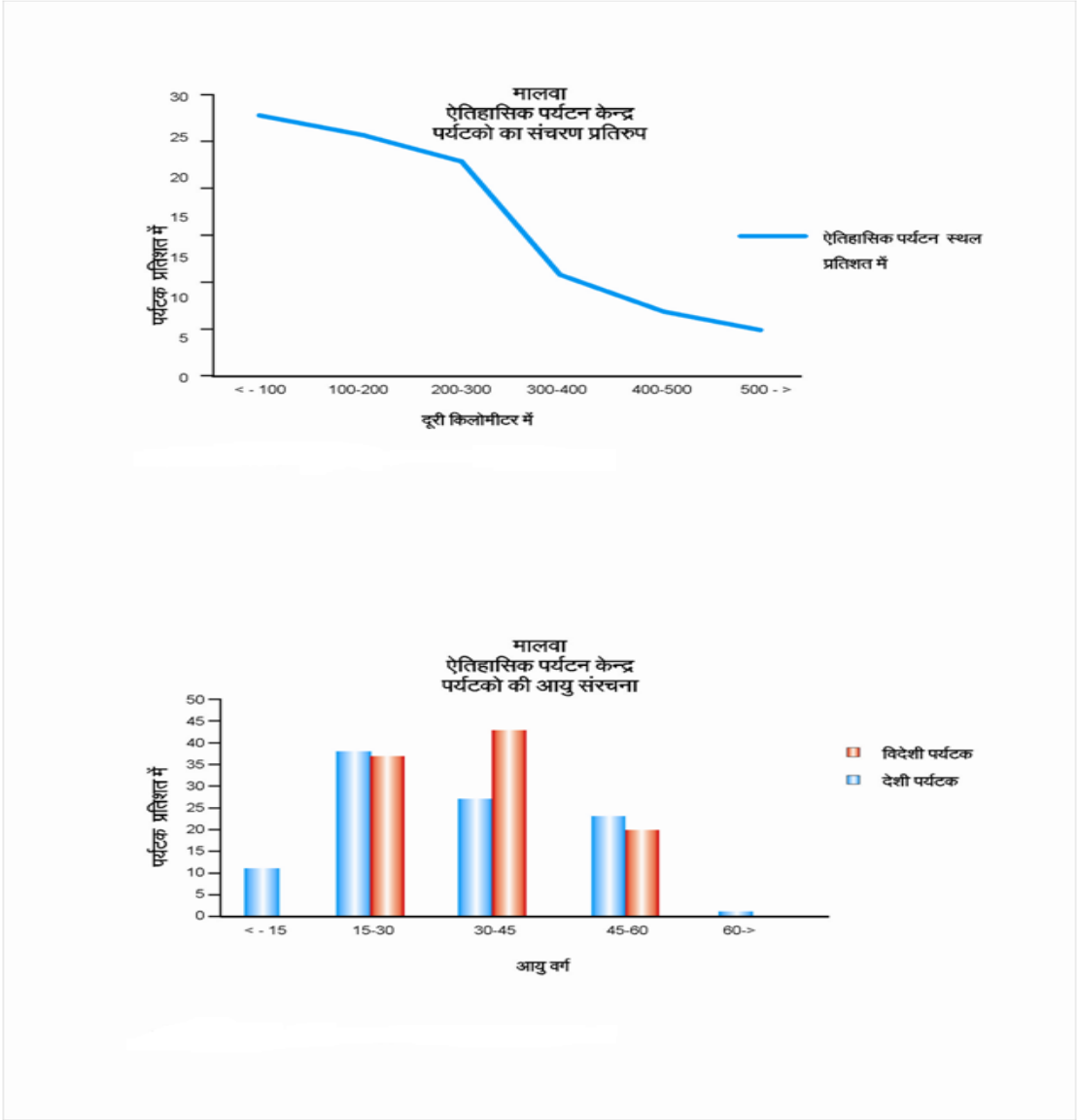

तालिका क्रमांक – 3
मालवा : ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रो में पर्यटको की लिंग संरचना(प्रतिषत मे)

लिंग संरचना	देषी पर्यटक	विदेषी पर्यटक
स्त्री	33	49
पुरूष	67	51
विवाहित	63	28
अविवाहित	37	72

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि पर्यटन केन्द्रो की ओर स्त्री पर्यटक की आपेक्षा पुरूष पर्यटक अधिक आकर्षित होते हैं। देषी पयर्टकों में लगभग 33 प्रतिषत पर्यटक स्त्री वर्ग के थे, वही 67 प्रतिषत पर्यटक पुरूष वर्ग से थे, जवकि विदेषी पर्यटकों में यह अंतर अपेक्षाकृत कम था लगभग 49 प्रतिषत पर्यटक स्त्री व 51 प्रतिषत पर्यटक पुरूष वर्ग से थे वही ऐतिहासिक केन्द्रों में आने वाले पर्यटको में लगभग 63

प्रतिषत देषी एवं 28 प्रतिषत विदेषी पर्यटक विवाहित वर्ग से थे।

पर्यटको की विश्राम करने की अवधि

पूर्व तालिका (तालिका क्रमांक 1) से स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक केन्द्रों में आने वाले लगभग 77 प्रतिषत पर्यटक निकटवर्ती क्षेत्रों से आते है और इनमें से लगभग 30 प्रतिषत पर्यटक अपने मित्र या रिष्तेदारो के यहां रूकना पसंद करते है जिसके उपरान्त पयर्टन केन्द्रों में पर्यटको की विश्राम करने की अवधि अपेक्षाकृत काफी कम होती है।

तालिका क्रमांक – 4

मालवा : ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रो में पर्यटको की विश्राम करने की अवधि (प्रतिषत मे)

विश्राम की अवधि	देषी पर्यटक	विदेषी पर्यटक
0–1 दिन	62	59
1–2 दिन	37	39
2–3 दिन	01	02

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक केन्द्रो मे आने वाले लगभग 37 प्रतिषत देषी व 39 प्रतिषत विदेषी पर्यटक ही एक या दो दिन तक पर्यटक केन्द्रो मे रूकना पसंद करते है। जबकि 62 प्रतिषत देषी व 59 प्रतिषत विदेषी पर्यटक एक या आधे दिनों में ही पर्यटन केन्द्रो का श्रमण कर अपने गन्तव्य स्थल की ओर लौट जाते है।

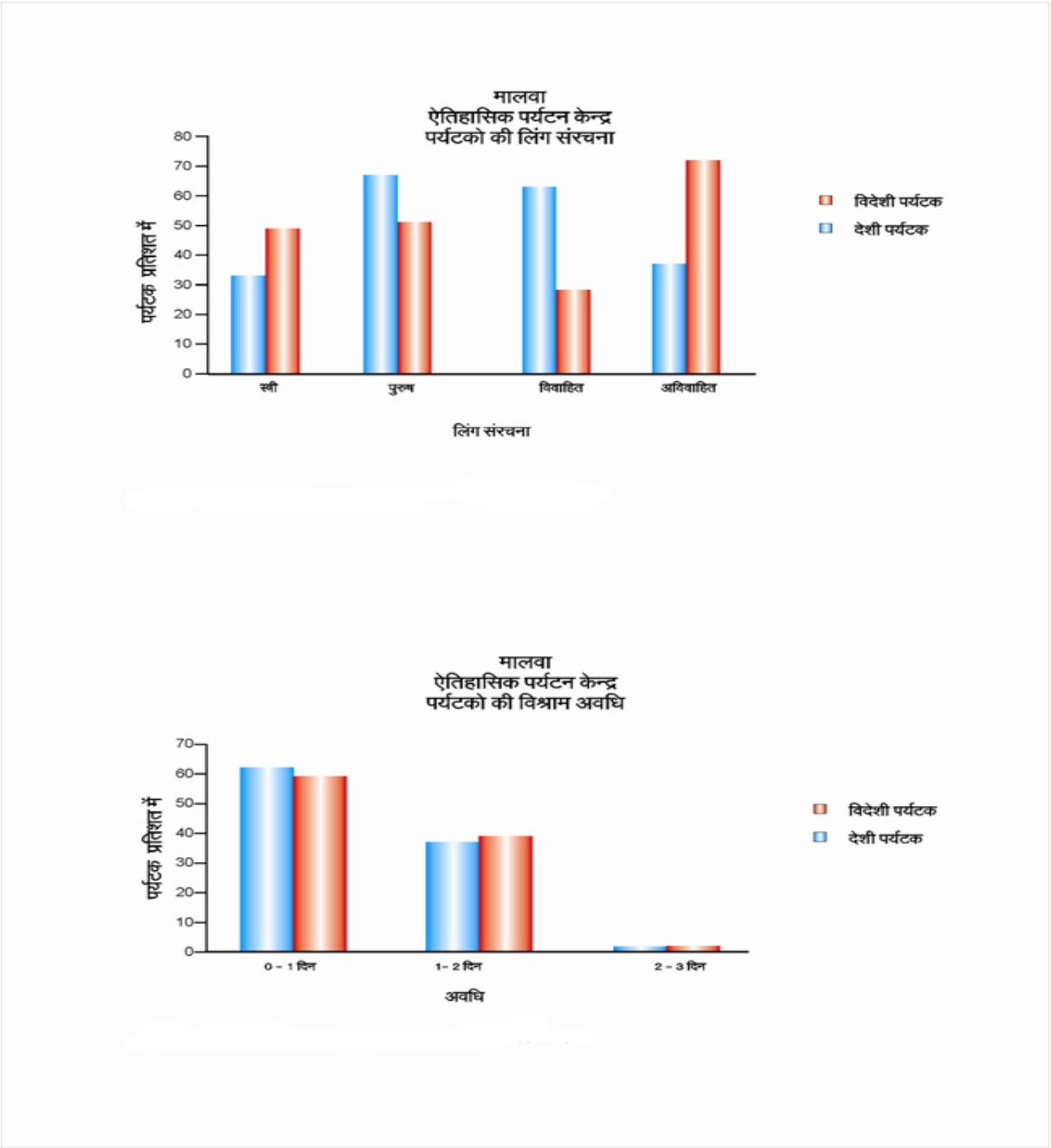

श्रमण हेतु अनुकूल समय

मध्य प्रदेष के उत्तरी पष्चिम भाग मे स्थित मालवा की जलवायु मानसूनी है जिससे पर्यटको का आगमन वर्ष भर होता रहता है। परन्तु पर्यटको के श्रमण हेतु अनूकुल समय वर्षाऋतु के पष्चात ही माना गया है।

तालिका क्रमांक – 5
मालवा : ऐतिहासिक पर्यटन स्थल पर श्रमण हेतु अनुकूल समय

माह	पर्यटक का आगमन (प्रतिषत मे)	
	देषी पर्यटक	विदेषी पर्यटक
जनवरी–अप्रैल	38	46
मई–अगस्त	06	–
सितम्बर–दिसम्बर	56	69

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रो में पर्यटको का सर्वाधिक आगमन वर्षा ऋतु के पष्चात अधिक होता है। औसतन 94 प्रतिषत देषी व 100 प्रतिषत विदेषी पर्यटक सितम्बर से अप्रैल के मध्य आते है। वही मई से अगस्त के मध्य केवल 6 प्रतिषत देषी पर्यटको का आगमन होता है। जबकि इस समय विदेषी पर्यटक एक भी नही आते है।

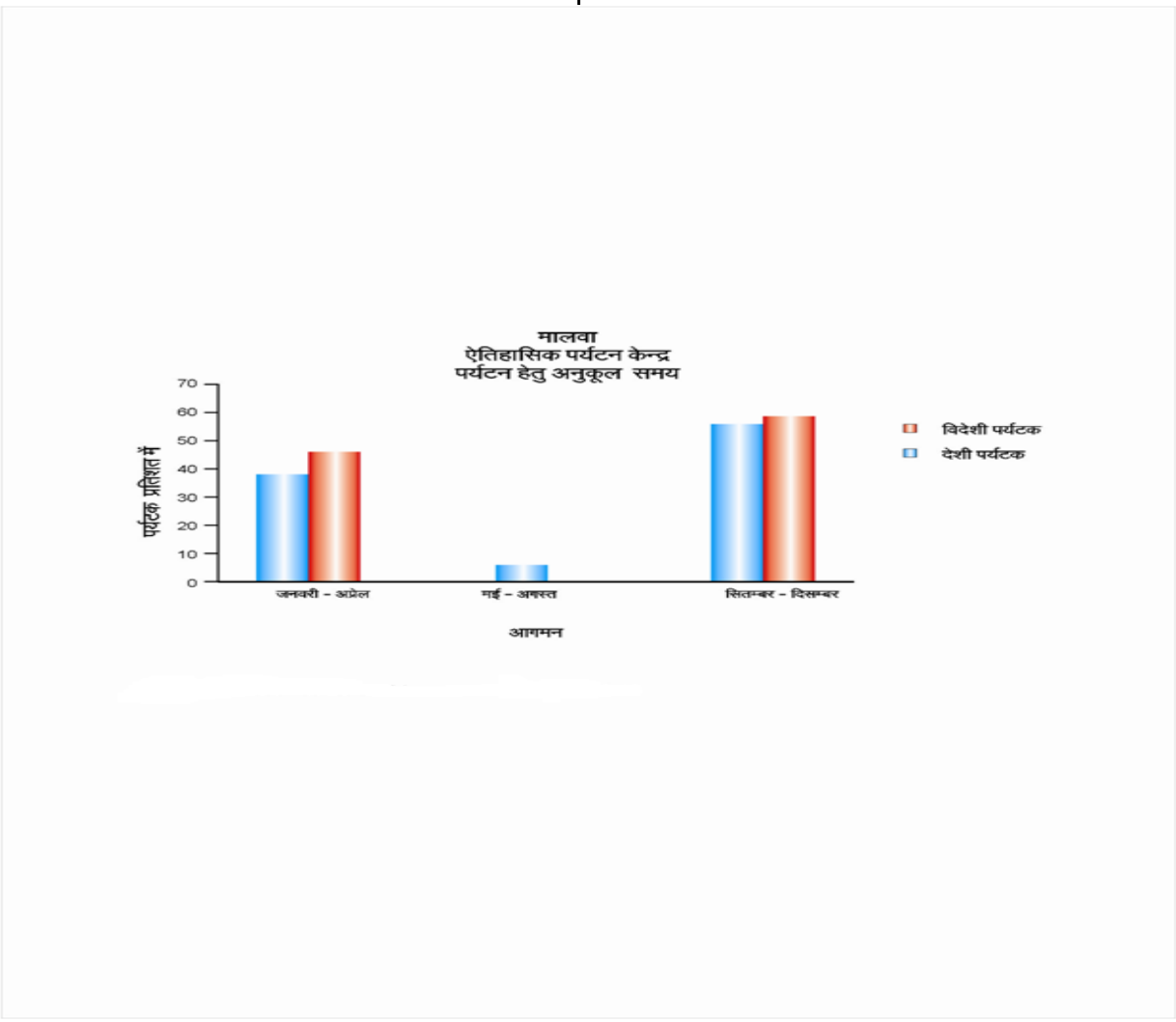

निष्कर्ष

पर्यटकों के संचरण प्रतिरूप से स्पष्ट होता है कि मालवा में 0 –100 कि.मी. की दूरी समस्त पर्यटन स्थलों पर महत्वपूर्ण है क्योंकि औसतन 28% पर्यटक केवल 0 –100 कि.मी. की दूरी तय करके आते हैं जबकि 500 कि.मी. से अधिक दूरी तय करके केवल 2 प्रतिषत पर्यटक ही मालवा में आए। ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों के कम आगमन का मुख्य कारण यह है कि प्रचार–प्रसार की कमी के कारण यह केन्द्र लोगों की जानकारियों में नहीं है जिससे पर्यटकों का आगमन

कम होता है। अन्य केन्द्रों की तुलना में प्रदेश में विदेशी पर्यटकों का आगमन और भी कम है। सांची, मांडू, उज्जैन, भीमबेटका पर्यटन केन्द्र को छोड़ दिया जाय तो अन्य केन्द्रों पर विदेशी पर्यटकों का आगमन नहीं होता है। अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों का आगमन निकटवर्तीय क्षेत्रों से होने के कारण पर्यटन स्थलों पर इनके विश्राम की अवधि भी सीमित है, औसतन 61% पर्यटक केवल आधे दिनों में ही पर्यटन केन्द्रों का भ्रमण कर लौट जाते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव पर्यटन व बाजार पर पड़ता है। प्रदेश के प्रायः सभी केन्द्रों में आधारभूत सुविधाएँ तो सुलभ हैं परंतु पर्यटन के उच्चतम यात्रा काल (अगस्त से दिसम्बर) एवं विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आवसर पर पर्यटकों के अधिक आगमन से जहाँ आधारभूत सुविधाओं में कमी आ जाती है वहीं संसाधनों पर दबाव भी बढ़ जाता है जिसके परिणाम स्वरूप संसाधनों का दोहन अपेक्षाकृत अधिक होने लगता है और उसका नकारात्मक प्रभाव पर्यटन पर भी पड़ता है। इन्हीं समस्याओं से निदान हेतु आज पारिस्थितिकी पर्यटन सर्वाधिक हो रहा है जो पर्यावरण को सुरक्षित रकने का एक प्रर्यायवाची है। पर्यटन का विकास पर्यावरण का अन्य आर्थिक व औद्योगिक विकास की अपेक्षा कम नुकसान पहुंचाता है। अगर बुद्धिमत्ता व पंसद के साथ इसे प्रयोग किया जाय तो पर्यटन, पर्यावरण में सौन्दर्यता व सुधार लाने का एक माध्यम बन सकता है।

संदर्भ सूची

दिक्षित के. के. गुप्ता जे.पी, 2003, पर्यटन के विविध आयाम, तक्षषिला प्रकाषन, नई दिल्ली
नेगी जगमोहन, 1999, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षषिला प्राकषन, नई दिल्ली
अवस्थी नरेन्द्र मोहन, तिवारी आर.पी. 2005, पर्यावरण भूगोल, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी